• पूजा-पाठ...

जमीन पर ना रखें ये सब

घर में पूजा-पाठ से जुड़ी चीजों को रखने के भी कुछ धार्मिक नियम बताए गए हैं। मान्यता है कि देवी-देवताओं की मूर्ति समेत समेत कुछ पवित्र वस्तुओं को जमीन पर नहीं रखना चाहिए। माना जाता है ऐसा करने से उन चीजों का अनादर होता है और घर में नकारात्मकता का प्रभाव बढ़ सकता है। इसलिए पूजा से जुड़ी चीजों को हमेशा साफ चौकी, कपड़े, आसन या किसी साफ बर्तन पर ही रखना चाहिए। क्योंकि पूजा के दौरान इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं को रखने के लिए स्थान की साफ-सफाई का ध्यान रखना जरूरी माना जाता है. आइए जानते हैं आखिर कौन-कौन सी चीजें जमीन पर रखना धार्मिक दृष्टि से सही नहीं माना जाता है और इन्हें रखने का सही तरीका क्या है?

- सबसे पहले बात भगवान की मूर्ति की. धार्मिक मान्यताओं में देवी-देवताओं की मूर्ति को बेहद पवित्र माना जाता है। इसलिए इन्हें सीधे फर्श पर रखना उचित नहीं माना जाता. घर के मंदिर में भगवान की मूर्ति को हमेशा चौकी, आसन या किसी ऊंचे और साफ स्थान पर रखने की परंपरा है।
- हिंदू धर्म में शंख का विशेष महत्व बताया गया है. पूजा के दौरान शंख से जल अर्पित करने और शंखनाद करने की परंपरा है। इसे भगवान विष्णु से भी जोड़कर देखा जाता है। मान्यता है कि शंख को सीधे जमीन पर रखने से बचना चाहिए. पूजा के बाद इसे किसी साफ कपड़े या पूजा की चौकी पर रखना बेहतर माना जाता है।
- दीपक पूजा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसे प्रकाश और सकारात्मकता का प्रतीक माना जाता है। इसलिए जलते हुए दीपक को सीधे फर्श पर रखने के बजाय दीपक को किसी चौकी, थाली पर रखना सही माना गया है।
- शालिग्राम और शिवलिंग को भी धार्मिक दृष्टि से बहुत ही पवित्र माना जाता है। घर में इनकी पूजा करने वाले लोग इन्हें हमेशा साफ और ऊंचे स्थान पर रखते हैं। मान्यता के अनुसार, इन्हें सीधे जमीन पर नहीं रखना चाहिए. पूजा के दौरान भी इनके लिए साफ आसन या पूजा की चौकी का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- भगवद गीता, रामायण और अन्य धार्मिक ग्रंथों को ज्ञान और धर्म का प्रतीक माना जाता है। इसलिए इनका भी सम्मान करने की परंपरा है. मान्यता है कि धार्मिक पुस्तकों को सीधे फर्श पर रखने के बजाय किसी साफ कपड़े, पुस्तक स्टैंड या ऊंचे स्थान पर रखना चाहिए।

• व्रत...

राधा अष्टमी

राधा अष्टमी हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों में से एक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को राधा रानी का धरती पर प्राकट्य हुआ था। इस दिन भक्त राधा रानी की पूजा-अर्चना और व्रत करते हैं। राधा रानी को प्रेम, भक्ति और निस्वार्थ समर्पण का प्रतीक माना जाता है। यही वजह है कि राधा अष्टमी का पर्व भगवान श्रीकृष्ण के भक्तों के लिए भी बेहद खास माना जाता है।

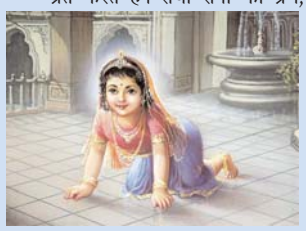

मान्यता है कि राधा रानी का प्राकट्य मध्याह्न यानी दोपहर के समय महाराज वृषभानु की यज्ञ भूमि में हुआ था। राधा अष्टमी का पर्व खासतौर पर ब्रज, बरसाना और वृंदावन में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन राधा-कृष्ण की पूजा करने से भक्तों को श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त होने की मान्यता है। धार्मिक मान्यताओं में राधा अष्टमी का संबंध जन्माष्टमी से भी जोड़ा गया है और कहा जाता है कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के व्रत-साधना का पूर्ण फल राधा रानी की आराधना के बिना अधूरा माना जाता है।

साल 2026 में राधा अष्टमी का व्रत शनिवार, 19 सितंबर को रखा जाएगा। पंचांग के अनुसार, अष्टमी तिथि 18 सितंबर को दोपहर 1 बजे से शुरू होगी और 19 सितंबर को दोपहर 3 बजकर 26 मिनट तक रहेगी। राधा रानी की पूजा मध्याह्न काल में करने की परंपरा है. इस दिन पूजा का शुभ मुहूर्त सुबह 11 बजकर 1 मिनट से दोपहर 1 बजकर 28 मिनट तक रहेगा।

धार्मिक मान्यता के अनुसार, राधा अष्टमी भगवान श्रीकृष्ण की प्रिय राधा रानी के प्राकट्य दिवस के रूप में मनाई जाती है। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को राधा रानी महाराज वृषभानु की यज्ञ भूमि से प्रकट हुई थीं। इसी वजह से इस दिन को राधा रानी के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण की आराधना राधा रानी के बिना पूर्ण नहीं होती। इसी आधार पर कहा जाता है कि जन्माष्टमी पर किया गया व्रत और साधना तब तक पूरी नहीं मानी जाती, जब तक राधा अष्टमी पर राधा रानी का व्रत और पूजन न किया जाए। भक्त राधा रानी की पूजा करके उनके प्रेम और भक्ति का स्मरण करते हैं और श्रीकृष्ण की कृपा की कामना करते हैं।

राधा अष्टमी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र पहनकर व्रत का संकल्प लें। इसके बाद घर के मंदिर में चौकी पर लाल या पीले रंग का कपड़ा बिछाकर राधा-कृष्ण की मूर्ति स्थापित करें। राधा रानी और भगवान कृष्ण को पंचामृत से स्नान कराएं। इसके बाद फल, फूल, रोली, चंदन और शृंगार की सामग्री अर्पित करें।

पूजा के दौरान राधा रानी का ध्यान करते हुए विधि-विधान से उनकी आराधना करें। इसके बाद उन्हें खीर और मिठाइयों का भोग लगाया जा सकता है। मान्यता है कि श्रद्धा और भक्ति के साथ राधा रानी की पूजा करने से उनका आशीर्वाद मिलता है और भगवान श्रीकृष्ण की कृपा भी प्राप्त होती है।

बिहार के वन देवी मंदिर का रहस्य

मां वन देवी मंदिर बिहार के पटना जिले के बिहटा क्षेत्र में अमहारा, राघोपुर और कंचनपुर गांवों की सीमा पर स्थित बताया जाता है।

स्थानीय मान्यताओं के अनुसार यह मंदिर करीब 350 से 400 साल पुराना है और इसका इतिहास कई रहस्यमयी कथाओं से जुड़ा हुआ है। इस मंदिर की सबसे खास बात ये है कि यहां देवी की कोई प्रतिमा स्थापित नहीं है। श्रद्धालु यहां एक प्राकृतिक और पवित्र पिंड को मां वन देवी के स्वरूप के रूप में पूजते हैं...

देशभर में ऐसे बहुत से मंदिर हैं, जो काफी रहस्यमयी माने जाते हैं। इन मंदिरों से जुड़ी तमाम तरह की मान्यताएं प्रचलित हैं, जिसके चलते दूर-दूर से लोग इनके दर्शन करने आते हैं। इन्हीं रहस्यमयी मंदिरों में से एक है बिहार का वन देवी मंदिर। बिहार में कई ऐसे धार्मिक स्थल हैं, जिनसे जुड़ी रहस्यमयी मान्यताएं लोगों को हैरान कर देती हैं। इन्हीं में से एक है पटना के बिहटा इलाके में स्थित मां वन देवी मंदिर, जिसे एक प्राचीन और रहस्यमयी सिद्धपीठ माना जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि इस मंदिर में सूर्यास्त के बाद कोई नहीं रुकता और शाम की आरती के बाद पूरा परिसर खाली कर दिया जाता है। अब यह मंदिर एक बार फिर चर्चा में है, क्योंकि दावा किया जा रहा है कि सिद्धार्थ मल्होत्रा और तमन्ना भाटिया की फिल्म 'द वन' की कहानी भी इस मंदिर और इससे जुड़ी लोककथाओं से प्रेरित है।

मां वन देवी मंदिर बिहार के पटना जिले के बिहटा क्षेत्र में अमहारा, राघोपुर और कंचनपुर गांवों की सीमा पर स्थित बताया जाता है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार यह मंदिर करीब 350 से 400 साल पुराना है और इसका इतिहास कई रहस्यमयी कथाओं से जुड़ा हुआ है। इस मंदिर की सबसे खास बात ये है कि यहां देवी की कोई प्रतिमा स्थापित नहीं है। श्रद्धालु यहां एक प्राकृतिक और पवित्र पिंड को मां वन देवी के स्वरूप के रूप में पूजते हैं। यही वजह है कि इस मंदिर को दूसरे देवी मंदिरों से अलग माना जाता है।

वन देवी मंदिर से जुड़ी सबसे चर्चित मान्यता सूर्यास्त के बाद की पाबंदी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि शाम को आरती और मंदिर के कपाट बंद होने के बाद यहां किसी को रुकने या आने-जाने की इजाजत नहीं दी जाती। यहां तक कि मुख्य पुजारी भी शाम की पूजा के बाद मंदिर परिसर खाली कर देते हैं। इन्हीं रहस्यमयी परंपराओं के कारण ये मंदिर लोगों के बीच खासा चर्चित रहता है।

बिहटा के वन देवी मंदिर की कहानी क्या है?

बिहार के पटना जिले के बिहटा (आनंदपुर) में स्थित मां वन देवी (वनदेवी) मंदिर का इतिहास और पौराणिक मान्यताएं अत्यंत प्राचीन और चमत्कारिक मानी जाती हैं। जनश्रुतियों के अनुसार, प्राचीन काल में ये पूरा क्षेत्र सघन जंगलों (वनों) से ढका हुआ था। माना जाता है कि महाभारत काल में जब पांडव अज्ञातवास के दौरान इस क्षेत्र से गुजर रहे थे, तब उन्होंने यहां देवी शक्ति की आराधना की थी। घने जंगल में स्थापित होने के कारण देवी मां को 'वन देवी' के नाम से पुकारा जाने लगा।

एक अन्य स्थानीय मान्यता के अनुसार, यहां के एक साधक को स्वप्न (सपने) में देवी मां के दर्शन हुए थे। स्वप्न में मिले निर्देश के बाद जब उस स्थान की खुदाई की गई, तो जंगल के बीच से मां की दिव्य प्रतिमा प्रकट हुई। इसके बाद ग्रामीणों और श्रद्धालुओं ने मिलकर वहां मंदिर का निर्माण करवाया।

वन देवी को बिहटा और आसपास के क्षेत्रों की 'संरक्षक देवी' (ग्राम देवी) माना जाता है। श्रद्धालुओं का अटूट विश्वास है कि जो भी भक्त यहां सच्चे मन से अपनी मनोकामना लेकर आता है, मां उसकी झोली कभी खाली नहीं छोड़ती हैं। नवरात्र के अवसर पर यहां विशाल मेले का आयोजन होता है, जहां दूर-दूर से श्रद्धालु मां के दर्शन और पूजा-अर्चना के लिए पहुंचते हैं। आज बिहटा का ये वन देवी मंदिर आस्था, शांति और आध्यात्मिक चेतना का एक प्रमुख केंद्र है।

चर्चा में क्यों है बिहटा का वनदेवी मंदिर

वन देवी मंदिर हाल के दिनों में उस वक्त सुर्खियों में आया, जब फिल्म द वन को लेकर ये चर्चा सामने आई कि इसकी कहानी और माहौल इस मंदिर से जुड़ी लोककथाओं से प्रेरित है। फिल्म में सिद्धार्थ मल्होत्रा और तमन्ना भाटिया नजर आने वाले हैं। इसके बाद बिहार की लोक-संस्कृति और इस रहस्यमयी मंदिर को लेकर लोगों की दिलचस्पी और बढ़ गई है। रात होते ही सुनसान हो जाने वाला मंदिर, बिना मूर्ति देवी की पूजा और महाभारत काल से जुड़ी कथाएं- वन देवी मंदिर का रहस्य आज भी लोगों के लिए आस्था और जिज्ञासा का विषय बना हुआ है।

■ पं. नित्यानंद

• वास्तु...

बेड के नीचे

वास्तु के अनुसार बेड के नीचे लंबे समय तक पुराने, टूटे-फूटे या बेकार सामान को नहीं रखना चाहिए. ऐसी चीजों को घर में जमा करके रखने से नकारात्मक ऊर्जा बढ़ने की मान्यता है. इसलिए जो सामान काम का नहीं है, उसे हटाना बेहतर माना जाता है.कई घरों में जगह बचाने के लिए जूते-चप्पल बेड के नीचे रख दिए जाते हैं. वास्तु की मान्यता के अनुसार ऐसा करना ठीक नहीं माना जाता. जूते-चप्पल को सोने की जगह के नीचे रखने से कमरे का सकारात्मक माहौल प्रभावित हो सकता है. इन्हें रखने के लिए अलग स्थान तय करना बेहतर माना जाता है.वास्तु शास्त्र में बेड के नीचे भारी मात्रा में लोहे या धातु का सामान रखने से भी बचने की सलाह दी जाती है. खासकर ऐसी चीजें जिनका इस्तेमाल रोजाना नहीं होता, उन्हें यहां जमा करना सही नहीं माना जाता. बेड के नीचे की जगह को जितना हो सकता है साफ ही रखना चाहिए.टूटी घड़ी, खराब इलेक्ट्रॉनिक सामान, टूटे खिलौने या ऐसी चीजें जो अब इस्तेमाल के लायक नहीं हैं, उन्हें बेड के नीचे जमा करने से बचना चाहिए. वास्तु मान्यताओं में घर में टूटी वस्तुओं को नकारात्मकता से जोड़कर देखा जाता है.

• रुद्राक्ष...

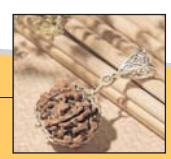

रुद्राक्ष को हिंदू धर्म में भगवान शिव से जुड़ा बेहद पवित्र माना जाता है। मान्यता है कि रुद्राक्ष धारण करने से व्यक्ति को आध्यात्मिक शांति मिलती है और मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। भगवान शिव के भक्त खासतौर पर रुद्राक्ष की माला या रुद्राक्ष की माला को धारण करते हैं। धार्मिक मान्यताओं में रुद्राक्ष को भगवान शिव के आंसुओं से उत्पन्न बताया गया है, इसलिए इसे श्रद्धा और आस्था का प्रतीक माना जाता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित